[Mr. Deputy-Speaker]

Rs. 2,15,72,000 be granted to the President to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1971, in respect of 'Repayment of Loans from General Revenues and Interest thereon—Development Fund'.'

Demand No. 18—Appropriation to Development Fund

"That a sum not exceeding Rs. 5,74,59,000 be granted to the President to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1971, in respect of 'Appropriation to Development Fund'."

Demand No. 19—Appropriation to evenue Reserve Fund

"That a sum not exceeding Rs. 3,63,130,00 be granted to the President to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1971, in respect of 'Appropriation to Revenue Reserve Fund'."

Demand No. 20—Payments towards Amortisation of Over-Capitalisation, Repayment of Loans from General Revenues and Interest thereon—Revenue Reserve Fund

"That a sum not exceeding Rs. 3,65,23,000 be granted to the President to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1971, in respect of 'Payments towards Amortisation of Over-Capitalisation, Repayment of Loans from General Revenues and Interest thereon—Revenue Reserve Fund'."

16.25 hrs.

APPROPRIATION (RAILWAYS) BILL*, 1970

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI NANDA) : I beg to move for leave to introduce a Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1970-71 for the purposes of railways.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

"That leave be granted to introduce a Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1970-71 for the purposes of railways."

The motion was adopted.

SHRI NANDA : I introduce** the Bill.

I beg to move** :

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1970-71 for the purposes of railways be taken into consideration."

MR. DEPUTY-SPEAKER : Motion moved :

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1970-71 for the purposes of railways, be taken into consideration."

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : उपाध्यक्ष जी, हमने अभी बड़े ध्यान से नये मंत्री महोदय का प्रवचन सुना और जितनी भी बातें सदस्यों ने उन के सामने रखीं सभी के बारे में उन्होंने यह कहा कि वह कंसीडर करेंगे, विचार करेंगे, ऐग्जामिन करेंगे। उन्होंने कहा कि मैं कोई भी एश्योरेंस इस समय नहीं दे सकता। मैं उनकी तकलीफ को जान सकता हूं। आज नन्दा जी ने जो अपनी पिक्चर रखी है वह एक मिनिस्टर आफ ऐग्जामिनेशन ऐंड कंसीडरेशन बन गये।

*Published in Gazette of India Extraordinary, Part II, section 2, dated 28.3.70.

**Introduced/moved with the recommendation of the President.

जो हैवी लासेज रेलवे में पिछले तीन, चार साल से चल रहे हैं उसके क्या कारण है नन्दा जी को अब थोड़ा ध्यान से देखना पड़ेगा। एक तो बात यह है कि जब इंडस्ट्रियल प्रोडक्शन का रेट ग्राफ ग्रोथ 7 परसेंट हो गया और बेसिक इंडस्ट्रीज की प्रोडक्शन, जैसे सीमेंट आदि, बढ़ गयी है, ऐग्रीकल्चरल प्रोडक्शन भी ठीक हो गया है तो फिर नुक्सान क्यों होता है। और यह जो वैगन ट्रैफिक, गुड्स ट्रैफिक है यह प्रोपोर्शनेटली कम क्यों हो रहा है, इस पर मंत्री जी को विचार करना चाहिए। खास तौर से सीमेंट में, शुगर, कोल, फ़ूड ग्रेन्स में प्रोपोर्शनेटली जितना प्रोडक्शन ज्यादा हुआ है उस हिसाब से आपके पास ट्रैफिक नहीं आया, उसका कारण क्या है ? कारण यह है कि ट्रैफिक सड़कों के द्वारा ज्यादा चला गया क्योंकि आपकी ऐफिशियेन्सी दिन पर दिन कम होती चली जाती है और लोगों की आशाओं को वह पूरा नहीं करती। इसलिये जब तक आप इसकी ओर ध्यान से नहीं देखेंगे काम नहीं चलेगा और आप नये टैक्स लगातार लगाते जाइये और अपनी इनऐफिशियेंसी की वजह से, अपनी नेग्लीजेंस की वजह से लोगों पर टैक्स लगाना मैं समझता हूँ माननीय नन्दा जी भी मानेंगे कि वह ज्यादती होगी। और इसी तरह से पिछले तीन, चार साल से हो रहा है। रेलवे डिपार्टमेंट में इनऐफिशियेंसी और गड़बड़ है और नुक्सान के नाम से कहानियां बना कर लोगों पर हर साल टैक्स लगाया जाता है यह चीज ठीक नहीं है। इसके दो, तीन कारण हैं। एक तो रेलवे में करप्शन बहुत है। जो यूज्ड टिकट हैं वह भी बाजारों में बिकते हैं। इनको आपको रोकना चाहिये। मुझे याद है कि जब वह गृह मंत्री थे तो उन्होंने कहा था कि अगर तीन साल में मैं करप्शन नहीं रोक सका तो मंत्री पद छोड़ दूंगा मैं उनसे प्रार्थना करूंगा, वह बुजुर्ग हैं, कि रेलवे डिपार्टमेंट में वह इसके लिए पूरी कोशिश करें। एक इंटेलीजेंस सैल बनायी जानी चाहिये जो इस तरह का करप्शन है, चाहे स्टेशन मास्टर के लेविल पर हो, चाहे ऊंचे लेविल पर हो, उन सब के बारे में वह सैल जांच करे और अपनी रिपोर्ट दे।

दूसरी चीज यह है कि जो उसका स्क्रैप होता है हर एक रेलवे में उसका फिजिकल चेकिंग कभी नहीं होता। मुझे मालूम है कि कई जगहों पर लाखों रुपयों का स्क्रैप दस-दस वर्षों से पड़ा सड़ रहा है, लेकिन न तो उसका डिस्पोजल होता है और न वह काम में लाया जाता है। अगर इसकी फिजिकल चेकिंग की जाय तो उससे करोड़ों रुपयों का लाभ हो सकता है। इसी तरह से करोड़ों रुपयों की चोरी होती है और आउटस्टेन्डिंग एक्स्पैन्डिचर दिन पर दिन बढ़ता चला जा रहा है। मैं आपको उसकी एग्जाम्पल देना चाहता हूँ। 1964-65 में आउटस्टैन्डिंग 10 करोड़ 68 लाख रुपये के थे और 1968-69 में वह बढ़कर 35 करोड़ रु० हो गया। आपको देखना होगा कि इसको कैसे ठीक किया जाये। तीन चार साल में 22 करोड़ रुपये बढ़ गया। हर साल रेलवे डिपार्टमैंट का ओवर-टाइम 4 या 5 करोड़ रुपया हो जाता है। यह किस तरह से होता है इसके बारे में भी आप को निगरानी करनी चाहिये।

यहां पर अनएकानमिक लाइन्स की बात कहीं गई। इसमें लीकेज बहुत होता है। अगर अनएकानमिक लाइंस को प्राइवेट ओनर्स को दे दिया जाय तो वह आपको भी नफा देंगे और अपना नफा भी कमायेंगे। इससे मालूम होता है कि कितना लीकेज हो रहा है, नहीं तो ट्रैफिक कम नहीं है।

मैं मांग करूंगा कि रेलवे को माडर्नाइज किया जाय। अपने बिल में माननीय मंत्री महोदय ने जिस समस्या के बारे में कहा है वह यह कि जो भी गुस्सा होता है वह रेलवे के

[श्री कंवर लाल गुप्त]

ऊपर उसको उतारता है। मैं उनसे पूर्णतया सहमत हूँ कि जो इस तरह का ऐन्टी सोशल और ऐन्टी नेशनल एलिमेंट है उसको कर्ब किया जाना चाहिए। मंत्री महोदय जो बिल लाये हैं उसका मैं स्वागत करता हूँ और कहना चाहता हूँ कि किसी को इसकी इजाजत नहीं दी जा सकती कि वह रेलों को किसी तरह का नुक्सान पहुंचाये। जब तक आप रेलवेज को माडर्नाइज नहीं करेंगे तब तक आपको होने वाला घाटा पूरा नहीं होगा।

अब मैं आपको दो तीन सुझाव देकर अपनी बात समाप्त करूंगा। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि दिन प्रति दिन रेलवे की ट्रैवेलिंग अनसेफ होती जा रही है। चोरी आदि तो होती ही है, अक्सर मर्डर्स भी हो जाते हैं। अभी आपको मालूम होगा कि जब डा० राम सुभग सिंह ट्रैवेल कर रहे थे तब बार्स को काटकर किसी ने उनके डब्बे में घुसने की कोशिश की। दीन दयाल जी का भी कत्ल हुआ था। एक महान आत्मा का रेलवे में कत्ल हो गया। इस प्रकार की घटना दुबारा न घटे किसी के साथ इसका ध्यान रखा जाय क्योंकि एक पागल आदमी इस तरह का काम कर सकता है।

दिल्ली के अन्दर एक रिंग रेलवे बनाई जानी चाहिये और वह अंडरग्राउन्ड रेलवे होनी चाहिये। आपने सर्वे की बात कही है। लेकिन यह सर्वे जितनी आहिस्ता से चल रही है उसको देखते हुए दो तीन सालों में यह अन्डरग्राउन्ड रेलवे नहीं बन सकती। दिल्ली में और भी बहुत सी समस्यायें हैं लेकिन कम से कम और ज्यादा हाल्टिंग स्टेशन्स और ज्यादा प्लेटफार्म की बहुत ज्यादा जरूरत है। श्री नन्दा दिल्ली के साथ बहुत पुरानी वाकफियत रखते हैं। मैं मांग करता हूँ कि दिल्ली की पब्लिक की और जो लोग दिल्ली से बाहर से यहां आते हैं उनकी क्या-क्या समस्यायें हैं एक छोटी सी कमेटी बनाकर इसकी एन्क्वायरी की जाय और उनकी दिक्कतों को दूर किया जाय।

मैं मंत्री महोदय का ध्यान इस बात की ओर दिलाना चाहता हूं कि जो भी रेलवे कालोनीज हैं दिल्ली में या बाहर, वह बहुत बड़ी स्लम्स हैं। अगर श्री नन्दा स्वयम् जाकर देखेंगे तो उन्हें मालूम होगा कि उनमें बेसिक अमेनिटीज भी नहीं हैं, यहां तक कि शौचालयों का भी इन्तजाम नहीं है और यह सरकार समाजवाद की बात करती रहती है। इतना ही नहीं, जो पहले रेलवे मंत्री थे श्री पुनाचा उनको ले जाकर दिखलाया गया बड़े-बड़े अधिकारियों ने भी उनको देखा है, लेकिन तीन सालों में कुछ भी उनके लिये नहीं हुआ है। जो कुछ आज श्री द्विवेदी ने कहा, मैं उसको रिपीट करना चाहता हूँ कि आज मंत्री श्री नन्दा हैं उनके पहले तीन चार मंत्री रह चुके हैं, लेकिन यहां मंत्रियों को यहां कौन पूछता है? मंत्रियों की दशा तो वैसी ही है जैसे बूढ़ी सास की हालत होती है जो लाचार और मजबूर होती है और राज बहू करती है। मैं चाहता हूँ मन्त्री महोदय बूढ़ी सास बनकर न रह जायें।

एक माननीय सदस्य : बूढ़ी सास तो डंडे चलाती है।

श्री कंवरलाल गुप्त : कई मजबूत सास भी होती हैं। मैं चाहता हूँ कि श्री नन्दा ऐसी ही सास बनें। उनको चाहिए कि ऐसी जगहों पर कम से कम बेसिक अमेनिटीज तो दें। मैं मन्त्री महोदय से प्रार्थना करूंगा कि वह दिल्ली की रेलवे कालोनीज में जायें और जाकर उनको देखें ताकि उनको पता लग सके कि उनके कर्मचारियों को क्या दिक्कतें हैं। वह केवल यहां से जाकर घर में बैठ जायें इस से काम नहीं चलेगा। उनको इसके लिए अपने को असर्ट

करना पड़ेगा ताकि जो भी उन लोगों की दिक्कतें हैं वह दुर हों।

दिल्ली में ट्रैफिक काफी है। यहां पर जो रेलवे क्रासिंग्स हैं उन पर ओवर-ब्रिज बनाने की बहुत जरूरत है। इसकी सर्वे कराई जाय। जैसी मैंने मांग की है इसके लिये एक छोटी सी कमेटी बनाकर सारी बातों का पता लगाया जाय। अगर श्री नन्दा ऐसा करेंगे तो यहां की जनता पर वह बड़ी भारी मेहरबानी करेंगे और जनता उनकी मश्कूर होगी।

इन शब्दों के साथ में कहना चाहता हूं कि जो भी घाटा हो उसको कम करना चाहिए और जो भी दिक्कतें हैं वह ठीक तरह से दूर की जानी चाहियें।

श्री नन्दा : मुझ से यह कहा गया है कि दिल्ली में ही जो रेलवे कालोनीज हैं उनकी हालत अच्छी नहीं है। जिस जगह उनके मकान हैं उसके इर्द-गिर्द जो गन्दगी है उसको दूर करने का कोई इन्तजाम नहीं हो रहा है और मैं जाकर उसको देखूं। मैं माननीय सदस्य से अर्ज करना चाहता हूँ कि मैं उनको देख आया हूं। उनकी बात सही है, जहां-जहां मैं गया वहां-वहां काफी त्रुटियां पाई, वहां गन्दगी थी, उसका इन्तजाम करने के लिए मैंने कहा है और उम्मीद है कि इसके लिए कुछ हो रहा है। सब बातें फौरन ठीक हो जायेंगी, यह वादा मैं नहीं करता लेकिन जितना ज्यादा से ज्यादा सुधार हो सकता है उसको करने की कोशिश की जायेगी।

माननीय सदस्य ने कहा कि यहां जो ट्रांसपोर्ट का सवाल है उसके सम्बन्ध में सर्वे करने में और एंक्वायरी करने में देर हो रही है। मैं इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ जानता हूँ। किसी वजह से यह रुकावट है और उसको जल्दी से जल्दी हटाया जाय इसके लिए प्रयत्न होगा।

माननीय सदस्य ने कुछ और भी बातें कहीं खास तौर से यह कि हमारी आमदनी में कमी होती जाती है और इसके कई कारण हैं जिनको हम दूर कर सकते हैं। मुझे भी उम्मीद है कि यह हो सकता है। मैं जानता हूँ कि कई ऐसी बातें हैं जिनमें अगर सुधार होगा तो हमें जो तकलीफ है वह कम हो जायेगी। मैं इन सब बातों की तरफ ध्यान देने की कोशिश करूंगा।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :

> "That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1970-71 for the purposes of railways, be taken into consideration."

Those in favour, will please say "Aye."

SOME HON. MEMBERS : Aye.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Those against will please say "No."

SOME HON. MEMBERS : No.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The Ayes have it. The Ayes have it.

SHRI KANWAR LAL GUPTA : The Noes have it. Sir, a point of order. Did you hear any voice in favour of Ayes ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : Let the lobbies be cleared then.

SHRI KANWAR LAL GUPTA : No, Sir ; not that. There was not a single voice for Ayes. You should have said that the Noes have it.

MR. DEPUTY-SPEAKER : I have heard Ayes. It was very clear. (*Interruption*) In order to remove any doubt, I shall put it again. The question is :

> "That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the service of the financial year 1970-71 for the purposes of railways, be taken into consideration."

The motion was adopted.